# 24 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

## पर आधारित योग अनुभूति

## सच्चे आशिक बन रुहानी माशुक से मिलन मनाने का अनुभव

➢➢ शिव प्रीतम के साथ कम्बाइंड हो जाने का अनुभव

➳ _ ➳ मन बुद्धि को सभी बाहरी बातों से डिटैच कर मैं रिलेक्स हो कर बैठ जाती हूँ

→ अपना संपूर्ण ध्यान मस्तक में भृकुटि सिहांसन पर एकाग्र करती हूँ

■ बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं स्पष्ट देख रही हूँ अपने दिव्य स्वरूप को

➳ _ ➳ मैं चैतन्य सत्ता आत्मा अलग हूँ

→ मुझे स्पष्ट अनुभव हो रहा है कि यह देह अलग है

■ अति तेजस्वी पूर्ण प्रकाशित स्वरूप है मुझ आत्मा का

➳ _ ➳ एकाग्र हो कर मैं अपने इस स्वरूप को देख रही हूँ

→ मुझ से निकल रही अनन्त शक्तियां चारों ओर फ़ैल रही हैं

→ वायुमण्डल को शुद्ध बना रही हैं

➳ _ ➳ अब मैं आत्मा रूपी पार्वती अपने मन बुद्धि को परमधाम में रहने वाले अपने शिव प्रीतम पर एकाग्र करती हूँ

➳ _ ➳ बुद्धि रूपी दिव्य नेत्रों द्वारा मैं स्पष्ट देख रही हूँ परमधाम में अखण्ड ज्योति के रूप में विराजमान अपने ज्ञान सूर्य शिव साजन को

→ उनसे आ रही दिव्य किरणों का प्रवाह परमधाम से सीधा मुझ आत्मा पर पड़ रहा है

→ एक दिव्य आलौकिक आनन्द की अनुभूति करवा रहा है

→ मेरे शिव प्रीतम से आ रही पवित्र तरंगों का प्रवाह मुझे अपनी ओर खींच रहा है

■ उनके प्रेम में मग्न मैं आत्मा पार्वती इस देह को छोड़ अब उनकी ओर बढ़ रही हूँ

→ सेकण्ड में साकारी दुनिया को पार करती हूँ

→ मैं पहुँच जाती हूँ उनके पास अपने स्वीट साइलेन्स होम में

→ और जा कर अपने शिव प्रीतम के साथ कम्बाइंड हो जाती हूँ

→ उनके निःस्वार्थ प्यार में मैं खो जाती हूँ

■ अपने असीम प्यार से, अपनी सर्वशक्तियों से वो मुझे पूरी तरह से भरपूर कर देते हैं

■ उनके निःस्वार्थ, निर्मल और निश्छल प्यार से भरपूर हो गई मैं आत्मा

---

➢➢ शिव माशूक पर सम्पूर्ण रीति बलिहार जाने का अनुभव

➳ _ ➳ साकारी देह में अपना पार्ट बजाना है

→ मैं लौट आती हूँ फिर से साकारी दुनिया

■ किन्तु अब यह साकारी दुनिया और इस दुनिया का कोई भी आकर्षण मुझे अपनी और आकर्षित नही कर रहा

■ अब मैं जान चुकी हूँ कि यह नश्वर देह और इस देह से जुड़े सारे सम्बन्ध केवल स्वार्थ की नींव पर टिके हैं

➳ _ ➳ इस असार संसार में कोई सार है ही नही

➳ _ ➳ केवल मेरे शिव साजन का प्यार ही निःस्वार्थ है

➳ _ ➳ मेरे सर्व सम्बन्ध केवल उनके साथ हैं

■ जैसे शमा पर परवाना पूरी तरह फ़िदा हो जाता है ऐसे ही मैं आत्मा भी सच्चा आशिक बन अपने शिव माशूक पर सम्पूर्ण रीति बलिहार जाऊंगी

➳ _ ➳ अपनी बुद्धि का योग केवल उनके संग ही जोड़ कर रखूंगी

➳ _ ➳ देह और देह की इस दुनिया में रहते हुए भी मैं ना तो इस देह से और ना ही इस देह से जुड़े सम्बन्धों में ममत्व रखूंगी

■ इनके बीच रहते इनसे तोड़ निभाते हुए मैं अपने मन बुद्धि की तार को सदा अपने शिव प्रीतम के साथ जोड़ कर रखूंगी

→ अब से अपने अविनाशी माशूक की निरन्तर याद में रहना है

→ मैं अपने दिल की प्रीत केवल उनके ही साथ रखूंगी

→ उनके लव में सदा लीन रहने वाली लवलीन आत्मा बनूँगी

→ हर कर्म करते उन्हें साथी बना कर उनके साथ का अनुभव सदा करती रहूँगी

■ पवित्रता की जो प्रतिज्ञा मैंने अपने शिव साजन से की है उस प्रतिज्ञा को मैं अवश्य पूरा करुँगी

■ देह अभिमान में आने के कारण मुझ आत्मा से जो विकर्म हुए हैं उन्हें योग अग्नि से भस्म कर पावन बनने का पुरुषार्थ मैं अवश्य करुँगी

■ मैं आत्मा आशिक बन फिर से खो जाती हूँ अपने शिव माशूक की प्यार भरी सुख देने वाले मीठी यादो में

■ अशरीरी बन पहुँच जाती हूँ अपने प्रीतम के पास और उनके प्रेम की

किरणों रूपी बाहों में मैं फिर से समा जाती हूँ